Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 4 | APRIL 2026

व्यक्तिगत मूल्य एवं लोकतांत्रिक चेतना: सोशल मीडिया के संदर्भ में अध्ययन

शेवाना [1] | डॉ. स्मिता मिश्रा [2]

[1] शोधार्थी, दयानन्द विमेन्स ट्रेनिंग कॉलेज, कानपुर, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

[2] शोधार्थी, दयानन्द विमेन्स ट्रेनिंग कॉलेज, कानपुर, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

ABSTRACT:

सोशल मीडिया उन डिजिटल संचार माध्यमों का समुच्चय है जो इंटरनेट और वेब-आधारित तकनीकों पर आधारित होते हैं तथा यह उपयोगकर्ताओं को सूचना के सृजन, प्रसार साझा करने और आपसी संवाद की सुविधा प्रदान करते हैं। यह प्लेटफॉर्म व्यक्तियों एवं समूहों को विचारों, अनुभवों, भावनाओं तथा सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर सहभागिता का अवसर देते हैं, जिससे व्यक्तिगत मूल्य और लोकतांत्रिक चेतना को दिशा मिलती है। हिन्टन और हजर्थ (2013) कहते हैं कि सोशल मीडिया को प्रौद्योगिकी आधारित दृष्टिकोण से देखने के बजाय, इसे उस रूप में देखना चाहिए, जो न केवल समाज में परिवर्तन ला रहा है, बल्कि समाज में आने वाले इन परिवर्तनों को वास्तव में प्रतिबिम्बित भी कर रहा है। प्रस्तुत शोध-अध्ययन में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति के अंतर्गत विषयवस्तु विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्तिगत मूल्यों तथा लोकतांत्रिक चेतना पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।इसके माध्यम से विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध सामग्री, युवाओं की सहभागिता, अभिव्यक्ति के स्वरूप तथा सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर उनकी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया।अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया सूचनाओं के तीव्र प्रसार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जन भागीदारी और सामाजिक जागरुकता को बढ़ावा देकर लोकतांत्रिक चेतना को सुदृढ़ करता है। हालाँकि अध्ययन में सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों पर भी प्रकाश डाला गया है। भ्रामक सूचना, फेक न्यूज का प्रसार तथा विचारों काध्रुवीकरण लोकतांत्रिक चेतना के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं। अतः अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सोशल मीडिया दोधारी तलवार के समान है, जो उचित उपयोग और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह शोध डिजिटल नागरिक के विकास के लिए महत्वपूर्ण दिशा भी प्रदान करता है।

KEYWORDS:

सोशल मीडिया, व्यक्तिगत मूल्य, लोकतांत्रिक चेतना, डिजिटल संचार माध्यम।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
15th April 2026	16th April 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.19607549	https://zenodo.org/records/19607549

1. प्रस्तावना

विश्व में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से संबंधित कई परिवर्तन देखे गए हैं, विशेष रूप से एक बड़ा परिवर्तन मोबाइल इंटरनेट के आगमन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के तीव्र गति से हुए प्रसार के रूप में आया है। यह मनोरंजन, समाचार और संचार का एक प्रमुख माध्यम बन गया है, जो वैश्विक स्तर पर लोगों को जोड़ता है। इसने तेजी से लोगों को प्रभावित कर उनके जीवन मे अहम जरूरत के रूप में जगह बनाई है।सोशल मीडिया उन डिजिटल संचार माध्यमों का समुच्चय है जो इंटरनेट और वेब–आधारित तकनीकों पर आधारित होते हैं तथा यह उपयोगकर्ताओं को सूचना के सृजन, प्रसार साझा करने और आपसी संवाद की सुविधा प्रदान करते हैं। यह प्लेटफॉर्म व्यक्तियों एवं समूहों को विचारों, अनुभवों, भावनाओं तथा सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों पर सहभागिता का अवसर देते हैं, जिससे व्यक्तिगत मूल्य और लोकतांत्रिक चेतना को दिशा मिलती है।सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति अपनी जगह से ही विभिन्न संस्कृति, जीवन–शैली और विचारधाराओं के निरंतर संपर्क में आसानी से जुड़ा रहता है, परिणामस्वरूप लोगों के नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में अभूतपूर्व परिवर्तन तेजी से हुए है। **हिन्टन और हजर्थ (2013)** कहते हैं कि सोशल मीडिया को प्रौद्योगिकी आधारित दृष्टिकोण से देखने के बजाय, इसे उस रूप में देखना चाहिए, जो न केवल समाज में परिवर्तन ला रहा है, बल्कि समाज में आने वाले इन परिवर्तनों को वास्तव में प्रतिबिम्बित भी कर रहा है।निस्संदेह आज स्कूल, माता–पिता, सरकार और सभी संस्थाए स्वयं को, अपने बच्चों को, अपने विद्यार्थियों को, नागरिकों को, समाज को और पूरे देश को सफल देखना चाहती हैं। इसी संदर्भ में सोशल मीडिया और लोकतांत्रिक चेतना की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

2. शोध समस्या का प्रादुर्भाव

पिछले 10 वर्षों में सोशल मीडिया के उपयोग की लोकप्रियता से व्यक्तिगत मूल्य एवं लोकतांत्रिक चेतना में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिले हैं। सोशल मीडिया के आगमन ने आज लोकतंत्र में लोगों की भागीदारी के तरीके को बदल दिया है। 2010 के दशक के बाद सोशल मीडिया के तीव्र प्रसार के साथ डिजिटल संचार के नए रूप सामने आए जिनमें विशेष रूप से व्हाट्सएप फॉरवर्ड्स, ट्विटर ट्रोलिंग और एल्गोरिदम आधारित सामग्री का चयन प्रमुख हैं। इन माध्यमों से सूचना के प्रसार प्रचार तेजी से बढ़ा है।

लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव को लेकर वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंताएँ सामने आई है। वैश्विक स्तर पर सरकारों और गैर–राज्य अभिनेताओं ने ऑनलाइन बहस को प्रभावित करने तथा कई बार राजनीतिक आलोचना को दबाने के उद्देश्य से सोशल मीडिया सामग्री को नियंत्रित करने के प्रयासों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। **फ्रीडम हाउस** के हालिया अध्ययन के अनुसार, हेरफेर और गलत सूचना तकनीकों के उपयोग ने एक ही वर्ष में कम से कम 17 देशों के चुनावों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। विशेष

रूप से **वर्ष 2016** के कैम्ब्रिज एनालिटिका घटना ने यू. एस.चुनाव में डेटा हेरफर ने लोकतंत्र पर खतरे को उजागर किया। इसके परिणामस्वरूप मतदाताओं की वैध सार्वजनिक विमर्श और विश्वसनीय समाचार के आधार पर अपने नेताओं का चयन करने की क्षमता कमजोर हुई है। **भारत में 2019** चुनावी मिसइन्फॉर्मेशन और **दिल्ली दंगों (2020)** ने सोशल मीडिया के नकारात्मक उपयोग को दिखाया। इसके अतिरिक्त **वर्ष 2023** के **छप्डभ।छै** जैसे संस्थानों द्वारा किए गए अध्ययनों में पाया गया है कि 30: शहरी भारतीय किशोर सोशल मीडिया की लत से जुड़े हैं। सोशल मीडिया पर बढ़ती संस्कृतिक तुलना व्यक्ति के आत्म–मूल्य और आत्म–सम्मान को प्रभावित करती है।इन घटनाओं के अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि सोशल मीडिया व्यक्तिगत मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना दोनों को सकारात्मक और नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है, जिसके इस विषय पर अध्ययन करना चिंता का विषय बन गया है।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वतमान डिजिटल युग में सूचना एवं प्रौद्योगिकी क संसाधनों में सोशल मीडिया कनेक्टिविटी का मुख्य माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि इसने न सिर्फ हमार वैयक्तिगत मूल्यों, नैतिकता और सोचने के तरीकों को तीव्रता से प्रभावित किया है बल्कि हमारे विचारों, व्यवहार और दृष्टिकोण को आकार भी दिया है।विश्व स्तर पर देखे तो विशेष रूप से युवा सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करते है। इस प्रकार सोशल मीडिया का प्रतिदिन उपयोग व्यक्तिगत मूल्य और लोकतांत्रिक चेतना का प्रभावित कर रहा है। आज सोशल मीडिया समकालीन समाज में नागरिकसहभागिता का एक प्रभावशाली मंच बनकर उभरा है। इसके माध्यम से नागरिक स्वय को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करने क साथ–साथ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर सक्रिय रूप से संवाद एवं विचार विमर्श सरलता से करता है। इस प्रकार स्वतंत्र आत्म अभिव्यक्ति और विचार विमर्श से नागरिकों में लोकतांत्रिक चेतना का विकास होता है।

आज के युग में सोशल मीडिया लोगों के लिए एक वरदान बन गया है। इसक उचित उपयोग से लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरुक हुए है तथा समानता, सहिष्णुता और सहभागिता जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को समझन और उनका सही उपयोग करने में सक्षमहए हैं। सोशल मीडिया ने अहिंसक संघर्ष को एक नया रूप द दिया है जिसे डिजिटल सत्याग्रह कहा जा सकता है।हालांकि सोशल मीडिया के अनेक सकारात्मक योगदान क साथ–साथ कई गम्भीर चुनौतियाँ भी सामने आई है। जिसमे सबसे बड़ी चुनौती फेक न्यूज है। सूचना क्रान्ति के दौर में जहाँ आम व्यक्ति तक सूचनाओं के भंडार ने उसकी समझ को दुरुस्त किया है वहीं फर्जी खबरों के प्रसार ने उसकी समझ को विकृत करने में भी अपनी भूमिका निभाई है। शोध से पता चला है कि फेसबुक गलत सूचना फैलाने वाला प्रमुख प्लेटफॉर्म है। कृत्रिम बुद्धि ; ।प्द्ध का उपयोग कर लोग मनगढ़त कहानियो का प्रभावशाली बना कर फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर तेजी से प्रसारित कर रहे है। साशलमीडिया पर नियोजित तरीके से फैली झूठी और भ्रामक सूचनालोकतंत्र के लिए गम्भीर खतरा बनती जा रही है। ऐसी भ्रामक खबरेजनमत को प्रभावित कर साम्प्रदायिक तनाव को भड़काती है। है। **पत्रकार मारिया रेसा**ने सोशल मीडिया को समाज के सदस्यों के बीच अविश्वास बढ़ाने वाला **"विषाक्त कीचड"** बताया है।**गूगल की ट्रांसपेरेंसी रिपोर्ट के अनुसार**, प्रोपेगैंडा फैलाने मेपिछले दो वर्षों में राजनीतिक दलों ने चुनावी विज्ञापनों पर लगभग 80 करोड़ डॉलर (करीब 5,900 करोड़ रुपये) खर्च किए हैं। यह आँकड़ा दर्शाता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया चुनावी प्रचार, जनमत निर्माण और राजनीतिक संदेशों के प्रसार का प्रमुख माध्यम बन चुके हैं।

4. शोध शीर्षक

व्यक्तिगत मूल्य एवं लोकतांत्रिक चेतना : सोशल मीडिया के संदर्भ में अध्ययन

5. शोध उद्देश्य

व्यक्तिगत मूल्यों एवं लोकतांत्रिक चेतना पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में गुणात्मकअनुसंधान पद्धति के अंतर्गत विषयवस्तु विश्लेषण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

7. व्यक्तिगत मूल्य का सम्प्रत्यय

मूल्य मानवीय जीवन की सार्थकता, उसका धर्म और उसका अस्तित्व है।**स्वामी विवेकानंद** के अनुसार व्यक्तिगत मूल्य का सम्प्रत्यय 'अद्वैत वेदांत' पर आधारित है, इनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में निहित दिव्यता, आत्म–विश्वास, निः स्वार्थ सेवा, पवित्रता और निर्भयता आदि सर्वोच्च मूल्य ही व्यक्तिगत मूल्य है।

Hoover(1972)makes following assumption about Values: Values are acquired subconciously in many way. While some are the products of reflection, many are acquired from various social groups such as the family, the religion, or the Peer group, values possess to the cognitive and effective dimensions. Values can. be structured and restructured through processes of reflective thinking. Exferession of belief, feelings provide clues to one's values.

8. लोकतांत्रिक चेतना का सम्प्रत्यय

लोकतांत्रिक चेतना एक जागरूक समाज की नींव है, जो शासन को लोगो के प्रति जवाबदेह बनाती है और लोक (जनता) को वास्तव म सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित करती है। **डॉ. बी. आर. अंबेडकर के अनुसार** लोकतांत्रिक चेतना का आधार सामाजिक लोकतंत्र है, जिसमें स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जीवन के मूल सिद्धांत होते हैं। उनके विचार में राजनीतिक लोकतंत्र तभी सार्थक है जब उसके साथ सामाजिक लोकतंत्र भी समान रूप से स्थापित हो।

लोकतांत्रिक चेतना लोकतंत्र की आत्मा है, जो नागरिकों में स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा सक्रिय सहभागिता के प्रति समझ और जिम्मेदारी विकसित करती है। यह केवल चुनावी प्रक्रिया तक सीमित न होकर दैनिक जीवन में जवाबदेही, अधिकारों की रक्षा और कर्तव्यों के निर्वहन के प्रति सजगता का बोध कराती है।

9. सोशलमीडिया का सम्प्रत्यय

सोशल मीडिया जनसंचार के आधुनिक और प्रभावशाली माध्यमों में से एक प्रमुख माध्यम है, जिसने संचार की पारंपरिक सीमाओं को बदल दिया है। यह इंटरनेट आधारित डिजिटल मंचों का ऐसा समूह है, जिसके माध्यम से व्यक्ति, समूह और संस्थाएँ त्वरित रूप से सूचना का आदान–प्रदान, विचार–विमर्श, अभिव्यक्ति और सहभागिता कर सकते हैं।

Kaplan and Haenlein (2010): Define social media as "a group of Internet-based applications that build on the ideological and technological foundations of Web 2.0, and that allow the creation and exchange of user-generated content".

10. सोशल मीडिया का व्यक्तिगत मूल्य पर प्रभाव

सोशल मीडिया व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करने वाला एक शाक्तिशाली माध्यम बन चुका है। इसका प्रभाव व्यक्तिगत मूल्यों पर 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' दोनों रूप में देखा जा सकता है।

10.1. सकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति को विविध संस्कृतियों, विचारधाराओं तथा सामाजिक मुद्दों से संबंधित व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से प्राप्त उपयोगी जानकारी से लोगों में व्यक्तिगत मूल्यों जैसे सहिष्णुता, संवेदनशीलता, समानता, सहयोग और मानवतावाद के प्रति सम्मान बढ़ता है ।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लोग ऑनलाइन समूहों और समुदायों के माध्यम से टीमवर्क करते हैं जिसके परिणामस्वरूप सहयोग और सहभागिता जैसे गुण विकसित होते हैं। जिससे उनका व्यक्तित्व अधिक सामाजिक, संवेदनशील और उत्तरदायी बनता है।वैलेजला (2012) के अनुसार, "न्यू मीडिया अर्थात् सोशल मीडिया सामाजिक–राजनीतिक आंदोलनों में नागरिकों के हाथों एक क्रांतिकारी उपकरण है, जो त्वरित जुटाव, जागरूकता के प्रसार और विकेंद्रीकृत संवाद को सशक्त बनाता है।" यह दृष्टिकोण सोशल मीडिया को आंदोलनों का प्रमुख उत्प्रेरक मानता है और इसे नागरिक सहभागिता, जनसंगठन तथा लोकतांत्रिक संवाद को मजबूत करने वाला माध्यम बताता है।

10.2. नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया पर नियोजित रूप से फैलने वाली झूठी और भ्रामक सूचनाओं से ईमानदारी, विश्वास आर जिम्मेदारी जैसे व्यक्तिगत मूल्य कमजोर पड़ते हैं। परिणामस्वरूप लोगों में असुरक्षा, चिंता और नकारात्मकता बढ़ती है। रेन्गोल्ड ने इसे आभासी समुदायों पर केंद्रित बताया, जहाँ साझा हितों वाले लोग जुड़ते हैं। यह व्यक्तिगत मूल्यों को प्रभावित करता है, लेकिनध्रुवीकरण का खतरा भी पैदा करता है।

सोशल मीडिया पर ट्रालिंग और नफरत भरी टिप्पणियाँ युवाओं के आत्मसम्मान पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डालती है। लगातार अपमानजनक और आक्रामक प्रतिक्रियाओं का सामना करने से युवाओं में हीन भावना, अवसाद, अकेलापन और असुरक्षा की भावना बढ़ने लगती है। ऐसी परिस्थिति में वह आत्मघाती विचारों या आत्महत्या जैसे चरम कदम उठाते है। विभिन्न वैश्विक अध्ययनों, विशेषकर **विश्व स्वास्थ्य संगठन (भ्ब्) के अनुसार**, 19: किशोरों में साइबर बुलिंग से जुड़े आत्महत्या के विचार पाए गएहै तथा 17: किशोरों ने साइबर बुलिंग से जुड़े आत्महत्याका प्रयास है।

11. सोशल मीडिया का लोकतांत्रिक चेतना पर प्रभाव

11.1. सकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपने विचार, अनुभव और दृष्टिकोण साझा करने के लिए एक डिजिटल मंच प्रदान किया है।इस प्रकार यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सशक्त बनाते हुए डिजिटल लोकतंत्र की अवधारणा को मजबूत करता हैं, इन डिजिटल प्लेटफॉर्म पर नागरिक बिना किसी भौगोलिक या सामाजिक बाधा के सार्वजनिक संवाद में भाग ले सकते है।

सोशल मीडिया के माध्यम से सरकार और संस्थाओं की गतिविधियों पर जनता की निगरानी बढ़ी है। इसके कारण भ्रष्टाचार, अन्याय तथा सामाजिक समस्याओं को उजागर करना अधिक सरल हो गया है। इस प्रकार सोशल मीडिया पारदर्शिता को बढ़ावा देते हुए शासन–व्यवस्था को अधिक जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

#AnnaHazare आंदोलन Anna Hazareds नेतृत्व में हुआ भ्रष्टाचार विरोधी जनआंदोलन सोशल मीडिया की लोकतांत्रिक शक्ति का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस आंदोलन ने फेसबुक, ट्विटर और अन्य डिजिटल मंचों के माध्यम से युवाओं और आम नागरिकों को बड़े पैमाने पर जाड़कर जनभागीदारी को अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ाया।सोशल मीडिया ने विभिन्न सामाजिक आंदोलनों को व्यापक जनसमर्थन और वैश्विक पहचान प्रदान कर लोकतांत्रिक चेतना को सशक्त बनाया है।

11.2. नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध गलत या भ्रामक सूचनाएँ, घृणास्पद भाषण तथा चुनावी हेरफेर जैसी प्रवृत्तियाँ लोगों में स्वतंत्र और तर्कसंगत सोच को कमजोर करती हैं। इसके परिणामस्वरूप समाज में जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसी विभाजनकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है, जिससे सामाजिक तनाव, अविश्वास और हिंसा की घटनाओं में वृद्धि देखी जा सकती है।

भारत में सोशल मीडिया पर फैली भ्रामक सूचनाओं के कारण सामाजिक तनाव और हिंसा के कई उदाहरण सामने आए हैं। 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों के दौरान सोशल मीडिया पर एक पुराना और भ्रामक वीडियो वायरल किया गया, जिसे स्थानीय घटना बताकर फैलाया गया। इस गलत सूचना ने साम्प्रदायिक तनाव को बढ़ाया और बड़े पैमाने पर हिंसा भड़क उठी। इसी प्रकार 2020 के दिल्ली दंगों के दौरान भी सोशल मीडिया पर अफवाहें, भड़काऊ पोस्ट और गलत जानकारी तेजी से फैली, जिससे लोगों में भय, अविश्वास और वैमनस्य की भावना बढ़ी तथा हिंसक घटनाओं को बढ़ावा मिला।

आज एल्गोरिदम–आधारित इको–चौंबर्स लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुके हैं, क्योंकि ये नागरिकों को सीमित और पक्षपाती सूचना वातावरण में रखकर विविध विचारों से संवाद को कम करते हैं तथा लोकतात्रिक बहस, सहिष्णुता और तर्कसंगत निर्णय–प्रक्रिया को कमजोर करते हैं।

12. शिक्षा में प्रासंगिकता

आधुनिक शिक्षा में सोशल मीडिया केवल सूचना प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में व्यक्तिगत मूल्य एवं लोकतांत्रिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

- सोशल मीडिया के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण की प्रक्रिया किसी भी समय और स्थान पर सहज रूप से संभव हो गई है, जिससे शिक्षार्थियों में निरंतर सीखने की प्रवृत्ति, आत्म–प्रेरणा और आजीवन अधिगम जैसे व्यक्तिगत मूल्यों का विकास होता है।
- सोशल मीडिया सूचना का असीमित स्रोत है, जो वैश्विक ज्ञान तक पहुँच सुनिश्चित करता है। यह ग्रुप डिस्कशन और लाइव लेक्चर जैसी सहयोगात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है। यहसहभागिता, संवाद और विचारों के आदान–प्रदान के सहयोग से जिम्मेदारी, सहिष्णुता जैसेव्यक्तिगत मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा के महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभरे हैं, जहाँ नागरिक नीतियों, शासन, चुनाव और सामाजिक प्रश्नों पर अपने विचार साझा करते हैं। यह प्रक्रिया सार्वजनिक संवाद, जागरूकता और सहभागिता को बढ़ावा देकर लोकतंत्र को मजबूत करती है। साथ ही नागरिक जिम्मेदारी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और तर्कसंगत विचार जैसे व्यक्तिगत मूल्यों को बढ़ावा देती है।

13. निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया आधुनिक समाज में व्यक्तिगत मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना को प्रभावित करने वाला एक अत्यंत शक्तिशाली माध्यम बन चुका है।यह लोकतांत्रिक चेतना और सकारात्मक व्यक्तिगत मूल्यों को सुदृढ़ करने की क्षमता रखता है। एक ओर सोशल मीडिया सहिष्णुता, जागरूकता, समानता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे व्यक्तिगत और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर इसके अनियंत्रित और गैर–जिम्मेदार उपयोग जैसे फेक न्यूज, ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग, आभासी तुलना की प्रवृत्ति, बढ़ता उपभोक्तावाद तथा भ्रामक सूचनाओं का व्यापक प्रसार लोगों में व्यक्तिगत मूल्य का ह्रास और लोकतांत्रिक चेतना की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है।आज सोशल मीडिया समाज के लिए गंभीर चुनौती का विषय बनकर उभरा है।हार्डी (2014) के अनुसार, सोशल मीडिया की भूमिका को केवल एक स्वतंत्र और सर्वशक्तिशाली माध्यम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे व्यापक आलोचनात्मक राजनीतिक–अर्थतंत्र और सत्ता संबंधों के संदर्भ में समझना आवश्यक है। उनका तर्क है कि सामाजिक–राजनीतिक आंदोलनों या लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में केवल डिजिटल माध्यम पर्याप्त नहीं होते; पारंपरिक मीडिया, जैसे समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन का संयोजन भी उतना ही महत्वपूर्ण है।अतः डिजिटल साक्षरता, जिम्मेदार एवं नैतिक उपयोग और प्रभावी नीतिगत नियम के माध्यम से इसके सकारात्मक पक्षोंको सुदृढ़ किया जा सकता है तथा नकारात्मक प्रभावों को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

REFERENCES

1. Meikle] Graham(2016). *Social Media:Communication Sharingand Visibility (First Published)* by Routledge, 711 Third Avenue, New York

2. Burgess, J., Joshua Green (2018). *YouTube: Online video and participatory culture (second edition)*, Polity Press.

3. Peters, R.S., (1971). *Ethics and Education (Second Edition)*, George Allen and Unwin Ltd, London

4. Aggarwal, J.C., (2005). *Education for Values, Enviroment and Human Rights (First Edition)*, Shipra Publication, 115-A, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi-110092

5. Gupta, N.L. (2000).*Human Values in Education (First Edition)*, Concept Publishing Company, New Delhi-110059

6. Dhankar, Neerja (2010). *Value Education In Schools (First Edition)*, S.B. Nangia A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi

7. Gupta, N.L. (2002). *Human Values For The 21st Century (First Edition)*, Anmol Publications Pvt. Ltd., New Delhi

8. Dewey, John (1976). *Democracy and Education, Light & Life* Publishers, 242 – Tilak Street, Paharganj, New Delhi – 110055

9. Singh, Shireshpal, K., A., Chaudhary, Sarita, (2010). *Peace and Human Right Education,* S.B. Nangia APH Publishing Corporation, 4435-36/7, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi – 110002

10. Kumar, Krishna (1993). *Democracy and Education in India, nehru Memorial Museum & Library (First Edition)*, Radiant Publishers, E-155, Kalkaji, New Delhi – 110019

11. Peters, R.S. (1970). *Ethics & Education (First Edition)*, Photolithography, Great Britain by Alden and Mowbray, Oxford

12. Curran James (2010). *Media and society (First Edition)*, bloomsbury Academic

13 पाण्डेय, आर. एवंके. मिश्रा, (2009).मूल्य शिक्षा (तृतीय संस्करण), श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, डॉ. रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2

14. विलानीलम, जे. वी., (2005).मास कम्युनिकेशन इन इंडिया: ए साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव, नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन ।

15. प्रसाद किरन, (2009). कम्युनिकेशन फॉर डेवलपमेंट: रीइन्वेन्टिंग थ्योरी एण्ड एक्षन (प्रथम संस्करण), बी. आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, दिल्ली।

16. शर्मा, राधेश्याम, (2012).जनसंचार (छठवाँ संस्करण), हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला।

17. गोरमन, लिन एवं मैकलीन डेविड (2009).मीडिया एण्ड सोसायटी इन टू द ट्वेंटी फस्ट सेंचुरी- अ हिस्टोरिकल इन्ट्रोडक्षन (द्वितीय संस्करण), विली-ब्लैकवैल (अ जॉन विली एण्ड सन्स लिमिटेड पब्लिकेशन)।

18. नारायणन, एस. एस. एवं शालिनी नारायणन(2019).इण्डिया कनेक्टेड - न्यू मीडिया के प्रभावों की समीक्षा (द्वितीय संस्करण), सेज पब्लिकेशन्स इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली-110044।

19. मीणा, राम लखन (2018).मीडिया विमर्श आधुनिक संदर्भ (प्रथम संस्करण), कल्पना प्रकाशन, दिल्ली।

20. रेड्डी, जी. वी. एस. (2015). वैल्यू बेस्ड एजुकेशन एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स (प्रथम संस्करण), अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 4831/24, गोविन्द लेन, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002।

21. कुमार, रविंद्र (2013). शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (प्रथम संस्करण), विनय रखेजा, C/o आर लाल बुक डिपो (AN ISO 9001 & 2008 Certified Company) बेगम ब्रिज रोड, मेरठ- 250001।

22. पाण्डेय, रामषल, करुणा शंकर मिश्रा (2009). मूल्य षिक्षण (तृतीय संस्करण), श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, कार्यालयः डॉ. रांगेय राघव मार्ग, आगरा ISBN-81-7457-190-6

23. सिंह, श्यौराज 'बेचैन' (2023). मीडिया में सामाजिक लोकतंत्र की तलाश (प्रथम संस्करण), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, 4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

24. शुक्ल, अरविंद कुमार (2024). शरतीय लोकतंत्रः सोशल मीडिया एवं डिजिटलीकरण का प्रभाव. Vol. 03 (Issue 07). Pp 1-6. DOI – eISSN 2583 - 6986